॥ रावल पिक्चर्स कृत ॥

मिस इन्डिया

कलाकार—नरगिस, प्रदीपकुमार, प्रान, निशी, शम्मी आदि ।

169

एजेन्टों को पते मंगाने के लिये चार आने के टिकट भेजिये

हमारा सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये



सिनेमा के फोटो मंगाने को १) ८० पोस्टकार्ड के

वैरंगी मंगिये

सिनेमा सम्बन्धी पुस्तकें और फोटो मिलने का एक मात्र स्थान

प्रकाशक—

रतन एण्ड को० बुकसेलर

दरीबा देहली

कीमत एक आना

कथासार

भारतीय सभ्यता में पली हुई लड़की जीवन साथी पाकर अपने सौभाग्य पर फूली नहीं समाती परन्तु रमा उन लड़कियों में से नहीं थी। उसने अपनी सुहाग रात अकेले ही अपने कमरे में बिता दी और जब वह सवेरे उठी तो उसे मालूम हुआ कि उसका पति घर से गायब है। आगे छबिगृह पर

गाने

१—गोरी जरा मुखड़े से घूंघट उठाओ ना ना २
ऐसा भी क्या सुरतिया दिखाओ ना
शादी से पहले सवेरे तेरी गली में लगाये थे फेरे
याद करो बीती वो बतियां भुलाओ गोरी ज।
याद करो इक दिन अम्बुआ के पेड़ तले
ढोलक के सग २ नाचे थे शाम ढले
बचपन के गीत वही फिर से सुनाओ ना गोरी जरा
काहे को आई यह जालिम जवानी
भूल गई एक दम वो बतियां पुरानी
इससे तो अच्छा है मैके चली जाओ ना गोरी जरा
२। ओ मेरे सजना आजा रे आजा
रात मिलने की न जा रे न जा

सेज न महके चान्द न चमके
सांज न कोई तारा दमके
दिलने न छेड़े तार खुशी के
गीत मगर निकले हैं गमके
तू मेरी दुनियां में आजा रे आजा रात मिलन की
सोते २ मुझे अकेली छोड़ न जाओ जीवन चेली
तुझे पुकारे करे इशारे महदी वाली मेरी हथेली
तू मेरी दुनियां में आजा रे आजा रात मिलन की

३–ठोकर नसीब की जो खाकर भी मुस्कराये
इक रोज बढ़ के जो मन्जिल इसको गले लगाये
यह रंज यह मुसीबत किस्सा है जिन्दगी का
गम को खुशी बनाना है काम आदमी का
इन्सान क्या जो गम से घबरा के बैठ जाये ठोकर
हर रात की सुबह है हर शाम का सवेरा
रुकना न रास्ते में मन्जिल है तेरा डेरा
हर एक नई मुसीबत हिम्मत तेरी बढ़ाये ठोकर

४–रसा-जाऊं मैं कहां ये जमीं ये जहाँ छोड़ के
राह में मुझे चल दिया कारवां छोड़ के
अनिल ये भीगी रातें ये घुमड़ २ बरसातें
ऐसे में दिल से करले दो चार नजर की बातें
बाहों में आके खोजा सोजा जाऊं मैं
रसा-रात गुजरती जाये आस नजर न आये

रो न सकूं जब रोने न आँसू भी शरमाये आऊं मैं...
गमीत...ये भीगी भीगी रात—
रमा दर्द भरी तन्हाई याद तेरी फिर आई
छेड़ रहा है भूले फसाने दूर कहीं शहनाई आऊं मैं....

५ अलबेला मैं इक दिल वाला लड़ा हूँ मतवाला
जमाने से निराला

रात हो या दिन मुझे क्या मस्त मैं हरदम
खेल समझूं जिन्दगी को क्या खुशी क्या गम
माना गरीब हूँ फिर भी अजीब हूँ दिल का अमीर हूं
ता रा रा रा रम अलबेला
मेरी नगरी मन की दुनियां चीज क्या है तन
फूल हो या चांद तारे हैं मेरा धन
खाना खराब फिर भी मैं अपना आप जवाब हूं
ता रा रा रा रम अलबेला
आज का दिन जिन्दगी है मौत का दिन कल
लग रहा है चल चलाऊ तू भी प्यारे चल
मेले में घूम जा दिवाने चूम जा फूलों को चूम जा
ता रा रा रा रम अलबेला

६—जैसे को तैसा नहले पे दहला
दुनियां का प्यारे असूल है पहला
कलयुग है कलयुग सुनो दुहाई

तू भी बुरे करम बुराई बेचा बजाना बैंड बराबर
गाये चला जा श्रो मेरे भाई बैंडे को देखा
दुनियां शराफत को माने न बेचा
डंडे की धुन पर नाचे न बेचा
डंडा सबईया पार लगेगा डंडे बिन बजती है नैया जैसे
गाली के बदले जो देगा गाली खुसी होके दुनियां बजायेगी ताली
जी २ करेगा भूखा मरेगा न कोई वारिस न कोई माली जैसे

१—बादे सबा कुछ तो बता कैसे मेरा दिल खो गया
श्रो जी २ जी २ श्रो जी २ जी दिल खो गया
कल रात जब चांदनी थी जवां
श्रा निकले थे यूं हीं तो दिल यहां
चान्द ढलता गया दिल मचलता गया
प्यार का इक माना बहाना हुआ बादे सबा
लहर कैसे किनारे से टकरा गई
चली थी कहां से कहां आई
नाव बहती गई और यह कहती गई
है ये सुबह नई और यह जमाना नया बादे सबा

२ - मालिक ने हाथ काहे दो दो दिये
तू काम करे पेट भरे जब तक जिये
उठाये जा श्रो छोकरी ये जिन्दगी की टोकरी
रोजी हलाल की मेहनत की नौकरी

खाना हराम है जो बिना काम के मालिक
रूखी सूखी खायेंगे पसीना बहायेंगे
काहे किसी की गुलामी उठायेंगे
बन्दा जो अपनी कमाई को खाये पीये मालिक
जरूरत है कार की न रेशम के तार की
पहली भूख पेट की दूजी है प्यार की
मेहनत के बाद चले हाथों में हाथ लिए मालिक

६...आहा बदला वाहवा बदला जमाना
छः नये पैसों का पुराना एक आना
पहले सोलह पैसों की तो होती थी चवन्नी
हो गई अब बारह पैसों की दुअन्नी
उठ गया आने पाई का सब दाना
आहा बदला जमाना ...
छोटे छोटे नये पैसे बड़े प्यारे प्यारे
गोल मोल नन्हे मुन्हे आंखियों के तारे
रुपये के मिलें सौ भर लो खजाना
आहा बदला जमाना ...
सुन भाई बाप रहें खुश तेरे लाल
फकीर करे दो नये पैसों का सवाल
जो दो नये देगा एक पैसा पुराना
आहा बदला जमाना ...

॥ समाप्त ॥ २०७५

नव मारवाड़ी प्रेस, कटरा महेशदास, नई सड़क देहली

ज्योतिष शास्त्र

इस किताब द्वारा जन्म जन्मान्तर का हाल कहना, जन्म कुन्डली अथवा उसका हाल कहना, मौत जिन्दगी बताना गुप्त व मूक प्रश्नों का सही उत्तर देना, वर्षफल बनाना, साल की तेजी मन्दी तथा ... का फल करना, सब प्रकार के मुहूरत और शकुन बताना किताब खोलना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना, हस्त रेखा शास्त्र ... और ... आदि ज्योतिष के तमाम गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में बतलाया गया है। विद्वानों तथा सरल साधारण जनता के ज्योतिष शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान का अपूर्व संग्रह है। कीमत ४)

हस्त सामुद्रिक

जिसे पढ़ कर आप भी ज्योतिषियों के कान काटने लगेंगे। इसके जरिये हाथ की रेखायें देख कर वर्तमान और भविष्य दोनों काल का हाल सही-सही बतला देंगे स्त्री कैसी मिलेगी आपके भाग्य में धन है या नहीं किस काम में आपको लाभ रहेगा आदि-आदि सुगम रीति से बताया गया है—अनेक चित्र भी छापे गये हैं जिससे सब बात और रेखा देखने में बहुत सरलता आ गई है। ऐसा उपयोगी ग्रन्थ होने पर भी कीमत ४॥) डाक खर्च माफ।

नाड़ी ज्ञान तरंगणी

अनुवाद तरङ्गिनी सहित (भाषा टीका) इस किताब की मदद से हर एक मनुष्य नाड़ी को देखकर यह बतला सकता है कि बीमार को क्या रोग है। उसने कैसी चीज सेवन की है। नाड़ी के परीक्षा बगैर वैद्य और हकीम भी कुछ नहीं बतला सकते। पुराने जमाने में आयुर्वेद एवं चिकित्सा-शास्त्र सीखने के पहले नाड़ी ज्ञान सिखाया जाता था। इसके लिए हमारे यहां अनुभवी गुरुवर चिकित्सालय हो रहे हैं। कीमत केवल १) डाक खर्च अलग।

... एण्ड को०, बुकसेलर्स, दरीबा कलां, देहली।